MPOLCC-5 MA, Sem-II Dr. S.B. Kumar
Pol Science

CHESTER IRVING BARNARD

Q. प्रशासनिक विचारधारा में चेस्टर बर्नाड के योगदान की समीक्षा करें।

Ans → चेस्टर बर्नाड का जन्म 1886 में अमेरिका के मैसाचुसेट्स में एक गरीब परिवार में हुआ था। ये अपनी उच्च शिक्षा हार्वर्ड ~~कॉलेज से पूरी की।~~ के लिए हारवर्ड कॉलेज में 1906 में दाखिला लिया लेकिन उच्च शिक्षा पूरी किए बिना ही 1909 में से अमेरिका के बोस्टन में टेलीफोन टेलीग्राफ कम्पनी के विभिन्न पदों पर कार्य किया। 1948-52 तक वे रॉकफेलर फाउंडेशन के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया। इस प्रकार बर्नाड ने बिना स्नातक की डिग्री लिए सरकारी तथा निजी दोनों प्रशासन में सफलतापूर्वक अपनी भूमिका का निर्वाह किया। विभिन्न संगठनों में विभिन्न पदों पर कार्य करने का अनुभव ही उन्हें सरकार के प्रशासकीय अनुभव को सीखने का अवसर दिया।

चेस्टर बर्नाड संगठनात्मक सिद्धांत के प्रवर्तकों में अग्रगण्य हैं। व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर संगठनात्मक सिद्धांत का प्रतिपादन करने वाले कुछेक दार्शनिकों में इनका भी स्थान है। प्रशासकीय विचारधारा के Social System School के आध्यात्मिक पिता के रूप में इनकी ख्याति है। इनके प्रशासकीय विचारों का दिग्दर्शन इनकी प्रमुख पुस्तक The Organisation and Management में इनके संगठनात्मक एवं प्रबंधात्मक विचारों के साथ होता है। बर्नाड ने संगठन और मानव पर अपने विचार देते हुए अपनी पुस्तक में बताया है कि आज हर मनुष्य एक सांगठनिक-मानव युग में रह रहा है। सांगठनिक-मानव का अर्थ एक ~~ऐसा~~ वैसा व्यक्ति जो व्यक्तियों द्वारा संगठित समाज में निवास करता हो। आज दिन-प्रतिदिन संगठन की महत्ता बढ़ती जा रही है। संगठन के इस बढ़ते महत्व के कारण अब तो यह भी कहा जा रहा है

Scanned with CamScanner

कि मानव का व्यवहार ही संगठनात्मक हो गया है। बर्नाड ने संगठन को परिभाषित करते हुए कहा है कि "दो या दो से अधिक व्यक्तियों की सहकारी क्रियाओं की प्रणाली को संगठन कहते हैं।" बर्नाड की परिभाषा के अनुसार - संगठन का अर्थ व्यक्तियों अथवा कर्मचारियों का ऐसा समूह या समुदाय है जो सामान्य उद्देश्य की प्राप्ति हेतु प्रयत्न करता है। बर्नाड के अनुसार संगठन में सहकारिता (Cooperative) के तत्व अनिवार्य हैं। सहकारिता का तात्पर्य विभिन्न क्षमता वाले सामूहिक प्रयास से है। यह सामूहिक प्रयास संगठन के सामान्य उद्देश्यों की पूर्ति हेतु किया जाता है।

बर्नाड की पुस्तक The Functions of the Executive और The Organisation and Management के अध्ययन के पश्चात प्रशासनिक विचारधारा में बर्नाड की निम्नलिखित देन स्पष्ट होती है :

1.) संगठन सहकारी व्यवस्था के रूप में :- बर्नाड ने संगठन की पुरानी परिभाषा जो कि केवल सदस्यता पर जोर देती है, उसे अमान्य करते हुए नई परिभाषा दी है। बर्नाड के अनुसार "दो या दो से अधिक मनुष्यों के समवेत (साथ-साथ) एवं समन्वित क्रिया की व्यवस्था या पद्धति ही संगठन है।" इस पद्धति की पूर्णता हमेशा अपने अंशों के (हिस्सा) के कुल योग की अपेक्षा बड़ी होती है और प्रत्येक अंश किसी महत्वपूर्ण तरीके से प्रत्येक दूसरे अंश के साथ जुड़ा होता है। जो लोग संगठन के परिचालन के लिए कुछ करना चाहते हैं वे लोग एक-दूसरे के साथ सहयोग एवं संचार में सक्षम होते हैं।

बर्नाड ने अपनी पुस्तक में आर्थिक मानव के विचार का खंडन किया है और उसके स्थान पर अनुदान, संतोषन और संतुलन सिद्धांत का प्रतिपादन किया है। बर्नाड ने प्रश्न उठाया है कि क्यों कोई व्यक्ति किसी खास संगठन के परिचालन की क्रिया में सहयोगी होता है। यह तभी संभव है जबकि वह क्रिया व्यक्तिगत संतोष के रूप में व्यक्ति के लिए लाभदायक हो।

Scanned with CamScanner

2.) औपचारिक तथा अनौपचारिक संगठन :- बर्नार्ड के अनुसार औपचारिक (formal) संगठन तभी अस्तित्व में आता है जब
- व्यक्ति एक दूसरे के साथ संपर्क में हों
- जो कुछ करने के लिए इच्छुक हों तथा
- किये गए कार्य का कुछ सामान्य उद्देश्य हो।
इस प्रकार कहा जा सकता है कि कुछ व्यक्तियों के सामूहिक सहयोग द्वारा कुछ निश्चित उद्देश्य के लिए किए गए कार्य अथवा संगठन को औपचारिक संगठन कहते हैं।

व्यक्ति अपने संगठन में अपने व्यक्तिगत संबंध के आधार पर लगातार अंतःक्रिया करता रहता है। ऐसी अंतःक्रियाएँ समूहचर की प्रवृत्ति या कुछ व्यक्तिगत इच्छाओं की पूर्ति करने के कारण हो सकती हैं। ऐसी अंतःक्रियाओं के कारण ऐसा संबंध व्यवस्थित हो जाता है जिसे अनौपचारिक (informal) संगठन कहा जाता है। बर्नार्ड ने व्यक्तिगत संपर्कों, पारस्परिक क्रियाओं तथा मनुष्यों के सम्मिलित समूहीकरण के कुल योग को अनौपचारिक संगठन कहा है। ऐसे संगठन अनिश्चित, संरचनाहीन तथा आकाररहित पिंड होते हैं।

3.) सत्ता का सिद्धांत :- बर्नार्ड सत्ता की परंपरागत धारणा से सहमत नहीं हैं। वह सत्ता को अपने सिद्धांत के आधार के रूप में स्वीकृति को स्थापित कर देते हैं। सत्ता की परिभाषा देते हुए उन्होंने कहा कि "एक औपचारिक संगठन में संचार के गुणों द्वारा संगठन के सदस्य, या संगठन में योगदान करने वाले, संगठन से संबंधित शासन, निर्धारण जैसा कार्य करता या नहीं करता है।" संगठन में मनुष्य सत्ता को तभी स्वीकृत करता है जब निम्न लिखित चार शर्तें एक साथ प्राप्त होती है:
- जब संचार को समझ लिया जाता है
- जब संगठन उद्देश्य के अनुरूप होता है
- जब यह व्यक्तिगत पूर्णता के अनुकूल होता है
- उसके अनुकूल प्रतिक्रिया के लिए जब मानसिक और शारीरिक प्रतिक्रिया होती है।

Scanned with CamScanner

4) सत्ता के कार्य-

5) उत्तरदायित्व की व्यवस्था - सत्ता के साथ बर्नाड ने उत्तरदायित्व का भी व्यापक रूप से विवेचन किया है। इन्होंने नैतिकता की दृष्टि से दायित्व की समीक्षा की है।

6) संचार की व्यवस्था -

7) निष्पादक के कार्य -

8) संगठन में संचार प्रणाली को बनाए रखना -

9) मानवों से आवश्यक सेवाएँ प्राप्त करना -

10) उद्देश्यों तथा लक्ष्यों का निर्धारण -

आलोचना :- यद्यपि बर्नाड ने प्रशासकीय विचारधारा के प्रतिपादक के रूप में महत्वपूर्ण विचारों का प्रतिपादन किया है फिर भी इनके विचार आलोचना से परे नहीं हैं। कैनेथ आर० एंड्रूस ने अपनी पुस्तक "द The Foundation of the Executive" में बर्नाड के विचारों को दरिद्रता एवं सामान्यताओं का उदाहरण बताया है और उनकी कठिन शैली को मुख्य कमजोरी बताया है। लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि बर्नाड ने अपने अनुभव में व्यवहारिक उदाहरण को नहीं रखा है

निष्कर्ष :- अतः निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि बर्नाड ने मनुष्य के जीवन में सहकारिता को प्राथमिक आवश्यकता के रूप में बल दिया है। सहकारी कार्य और कार्यपालक (Executive) के कार्यों को प्रभावित करने वाले तत्वों को उन्होंने व्यवहारिक बुद्धिमता से बहुत अच्छी तरह स्पष्ट किया है। बर्नाड ने आर्थिक मानव की पुरानी धारणा खारिज करते हुए मायो (Mayo) तथा दूसरे मानव संबंधों के विचारकों के विचारों का प्रभावशाली ढंग से उपयोग किया है। संगठन के युग में उसने औपचारिक तथा अनौपचारिक संगठन की प्रक्रिया का विश्लेषण किया है। बर्नाड के विचार आज भी उपयोगी हैं क्योंकि उनमें बुद्धिमता और अनुभवशीलता का साथ-साथ संयोग हुआ है।

Dr. S. B. Kumar
Dept. of Pol. Science

Scanned with CamScanner